रमज़ान में हर नमाज़ के बाद की दुआ

दिन व रात के अअमाल :- मिलता है कि रमज़ान के महीने में हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े :

"या अलीयो या अज़ीमो या ग़फ़ूरो या रहीम अन्तर रब्बुल अज़ीमुल लज़ी लैसा कामिसलेही शैअुन व होवस्समीअुल बसीर व हाज़ा शहरुन अज़्ज़मताहू व कर्रमताहू व शर्रफ़ताहू व फ़ज़्ज़लताहू अलशशोहूर व होवश शहरुल लज़ी फ़रज़्ता सेयामोहू अलय्या व होवा शहरो रमाज़ानल्लज़ी अनज़ल्ता फ़ीहिल क़ुर्आन होदन लिन्नासे व बय्येनातिम मेनल होदा वल फ़ुर्क़ान व जाअलता फ़ीहे लैलातिल क़द्र व जाअलताहा ख़ैरन मिन अल्फ़े शहर फ़याज़ल मन्ने वला योमन्नो अलैका मुन्ना अलय्या बे फ़ेकाके रक़ाबाती मेनन्नार फ़ी मन ता मुन्नो अलैहे व अदख़िलनिल जन्नाता बेरहमातेका या अरहामरहिमीन"

{अर्थात् ए बुलन्द ए बड़े बख़्शने वाले ए महरबान तू परवर्दिगार है बड़ा, जिसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं है और वह सुनने वाला और देखने वाला है और यह वह महीना है जिसको तूने अज़मत, बुज़ुर्गी और शरफ वाला क़रार दिया है और फज़ीलत दी है, तूने इसको तमाम महीनों पर और वह ऐसा महीना है कि जिसके रोज़े को तूने वाजिब क़रार दिया मुझ पर और वह रमज़ान का महीना है, जिसमें तूने क़ुर्आन उतारा है हिदायत, लोगों के लिए और खुली हुई निशानीयां हैं हिदायत और हक़ व बातिल के तफ़रके की और क़रार दी है, तूने इसमें शब-ए-क़द्र और बनाया है तूने इस शब को बेहतर हज़ार महीनों से। अतः ए एहसान करने वाले और तेरे ऊपर एहसान नहीं किया जा सकता एहसान कर मुझ पर, मेरी जहन्नम की आग से, बख़्शिश के साथ उन लोगों में जिन पर तू एहसान करेगा और दाखिल कर मुझको जन्नत में अपनी रहमत से। ए सब रहम करने वालों से ज़्यादः रहीम।}

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990